उपर्युक्त सभी वानस्पतिक शोधकों में देवला तुलनात्मक रूप में सबसे अच्छा पाया गया है। इस संस्थान में तत्पर प्रयोग हेतु वानस्पतिक शोधक का चूर्ण तैयार किया है। कड़ाहे में स्कम (मैल) को बड़े छलने से निकालकर स्कम सेटलिंग टेंक में इकटठा करके थोड़ी देर बाद नीचे बैठे रस को कड़ाहे में वापस मिला लेते हैं जिससे लगभग 0.4: गुड़ की परता बढ़ जाती है ।

जब उबलता हुआ गाढ़ा रस स्ट्राइकिंग तापमान पर पहुॅंच जाता है तो कड़ाहे से उतार कर उसे लकड़ी के कूलिंग पैन में रख कर गुरदम से अच्छी तरह मिला लेते हैं । जब द्रव्य (स्लरी) खूब गाढ़ा हो जाता है तो इसे भारतीय गन्ना अनुसंधान
संस्थान द्वारा विकसित सांचे में
ढाल लेते हैं जिससे 2.5 सेमी
घनाकार (20-22 ग्राम) अथवा 2.5
सेमी0 ग 2.5 सेमी0 ग 1.25 सेमी
(10-11 ग्राम) वर्गाकार का बर्फी
जैसा गुड़ ढाल लेते हैं । लगभग
45 मिनट बाद, सांचे से गुड़ को
निकाल कर, छाये में सुखा लेते हैं

इस प्रकार बने आकर्षित एवं मूल्यवर्धित गुड़ को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित धातु चढ़ी लोहे की चादर से बनी विशेष प्रकार की कोठी (क्षमता लगभग 100 कि0 ग्रा.) में
भण्डारण कर लेते हैं । इसमें शुष्क मौसम में गुड़ को
सुखाया जाता है तथा वर्षात के दिनों में सुरक्षित रखा
जाता है।

 गुड़ की सांचे में ढलाई

 ग्ुाड़ भण्डारण

उत्तम गुड़ उत्पादन एवं भण्डारण

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान
रायबरेली रोड, दिलकुशा, लखन . 226002

 आकर्षित थैलियों में पैकिंग

इन बर्फी जैसे घनाकर अथवा वर्गाकार गुड़ को पालीथीन की आकर्षित थैलियों में (जिन पर गुड़ में उपलब्ध
पोषक तत्व लिखे होते हैं) भर कर बन्द (सील) कर
लेते हैं। ऐसा करने से उत्पादित गुड़ को
मक्खियों, धूल के कण एवं अन्य गन्दगियों से दूर
एवं ज्यादा सुरक्षित रखा जा सकता है एवं ग्राहकों
को उचित मूल्य पर बेचकर, उत्पादक मुनाफा
कमा सकते हैं।

इस प्रकार से उत्पादित और पैक किए गुड़ को निर्यात करने की काफी सम्भावनाएँ हैं।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
निदेशक

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ-226002
फोन: 0522-2480726 (का.), 0522-2451757 (नि.)
QSDl % 0522&2480738
bZ&esy % iisrlko@sancharnet.in

उत्तम गुड़ उत्पादन

ए वं भण्डारण

 गन्ने का चयन

उत्तम जाति के पूर्ण परिपक्व गन्ने का चयन कर उचित समय पर कटाई करके सूखे पत्ते, हरी पत्तियों वाली गेड़ी, जड़ें एवं मिटटी इत्यादि को हटाकर साफ कर लेते हैं। इसके पश्चात बिना विलम्ब के गन्ने की पेराई कर लेते हैं अन्यथा इनवर्जन से हानि होने लगती है ।

वाली भट्ठियॉं अच्छा काम करती हैं ।

इनकी विशेषता यह है कि बेकार जाने

वाली उष्मा (गरम हवा) का पूर्ण रूपेण

उपयोग दूसरे व तीसरे कड़ाहे में भरे रस

को लगभग 60-70 डिग्री सेन्टीग्रेड तक

गरम करने में कर लिया जाता है जिससे ईंधन की भी बचत हो जाती है ।

कड़ाहे में भरे गये रस की सफाई अति महत्वपूर्ण है क्योंकि भली भॉंति साफ किये गये रस से बनाया गया गुड़ हल्के स्वर्णिम रंग का रवादार, साफ-सुथरा एवं गन्दगी रहित उत्तम कोटि का होता है जो भण्डारण के लिये भी उपयुक्त होता है । रस में घुली हुई अशुद्धियों एवं गन्दगी को साफ करने हेतु वानस्पतिक रस शोधकों का प्रयोग उत्तम होता है । कुछ वानस्पतिक शोधकों के नाम व उनके उपयोग करने की संक्षिप्त विधि निम्न तालिका में दी गई है -

 रस का निर्मलीकरण

 गन्ने की पेराई

 रस छानना

 उपयुक्त भट्ठी पर रस को उबालना

गन्ने की पेराई करने हेतु

अच्छे क्रशर/ कोल्हू का चयन

अत्यावश्यक है। क्रशर ऐसा हो

जो लगभग 60 से 70: रस का

निष्कासन करने की क्षमता

रखता हो । खडे़ बेलन {वर्टिकल

रोलर} वाले क्रशर की तुलना में
पड़े बेलन {हारिजन्टल रोलर} वाले क्रसर लगभग 2 से 4ः ज्यादा रस निष्कासित करते हैं। रस निष्कासन से पहले तथा बाद में, क्रशर को गरम पानी से भली भॉंति धुलाई कर साफ कर लेना चाहिए ताकि सूक्ष्म जीवधारी सम्बन्धित प्रदूषण से मुक्त रखा जा सके।

निष्कासित रस को कम से कम तीन परतों वाली पतली छिद्र वाली जाली या मोटे कपड़े से छान लें जिससे खरपतवार, खोई की छोटी छोटी टुकड़ियॉं तथा जडें़ इत्यादि अलग हो जाय । फिर रस के भण्डारण टैंक

के ऊपर एक या दो सतही मोटे कपड़े को बॉंध कर रस को छान लेना चाहिये जिससे छोटे कणों वाली अशुद्धियाँ हट जाँये। तत्पश्चात् रस को पम्प की मदद से भट्ठी पर रखे विशेष रूप से बनाए कड़ाहे में इसकी क्षमतानुसार भर लेना चाहिये।

भट्ठी ऐसी होनी चाहिये जिसमें

कम से कम खोई या ईधन से पूरे

रस को उबाल कर गुड़ बनाया जा

सके तथा ईधन का नुकशान न हो ।

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान

द्वारा विकसित, दो व तीन कड़ाहे

उत्तम गुड़ के लिये उपयुक्त गन्ना प्रजातियाँ

क्र .सं. प्रदेश जल्द पकने वाली मध्य में एवं देर से पकने
प्रजातियाँ वाली जातियाँ
1ण् उत्तर प्रदेश को.शा. 687ए को.शा. 8436 को. 1148ए को.शा. 767ए बि.ओ. 91.
को. 95255ए को.शा. 94257 को.शा. 92254ए को.से. 92423
को.शा. 8432ए यू.पी. 39
2ण् बिहार बि.ओ. 136ए बि.ओ. 137ए को.शा. 767ए बि.ओ. 91ए बि.ओ. 106ए
को. 87263 को. 1148
3ण् पश्चिम बंगाल बि.ओ. 90 को.शा. 1148
4ण् उड़ीसा को. 7704ए को. 62175ए को. 7219ए को.ज. 8201एको.7706
को. 740 को. 62175
5ण् आसाम को. 8315
6ण् पंजाब को.शा. 8436ए को.89003 को.ज. 67
7ण् हरियाणा को. 89003ए को. 7717ए को. 1148एको.शा. 767
को.ज. 64
8ण् राजस्थान को. 997ए को. 527 को. 419ए को. 1007
9ण् मध्य प्रदेश को. 775ए को.का 671 को. 419ए को. 62175ए
को.लक. 8001ए को. 1148
10ण् गुजरात को. 775ए को.क 671ए को. 7527ए को 8021ए
को.लक 8001 को. 62175ए को. 8011ए को.740
11ण् महाराष्ट्र को. 419ए को. 775ए को. 740ए को. 7219ए को.म. 7125
को. 7219ए को.क. 671 को. 7527ए को. 86032
12ण् कर्नाटक को.क. 671ए को. 85002 को. 62175ए को. 740ए को. 8014ए
को. 8021ए को. 8011ए को. 86032
13ण् आन्घ्र प्रदेश को. 6907ए को.ट. 8201ए को. 62175ए को.अ. 7602ए को.7219
को. 8014ए को.क 671
14ण् तामिलनाडु को.क 671ए को. 7704ए को. 6304ए को. 8021ए को. 86032
को. 8208

प्रयोग की
संक्षिप्त
विधि

क्रम
सं0

OkkuLifrd
श् ाोधकों
का नाम

प्रयोग में
आने वाला
Hkkx

उपयुक्त
मात्रा
(ग्राम प्रति
कु0 रस)

देवला तना व जड़ पानी में भिगोकर एवं
रगड़कर चिपचिपा द्रव्य
बनाकर प्रयोग करते हैं

भिन्डी
Qkylk
सेमल
सुकलाई

तना व जड
हरी छाल
हरी छाल
सुखी छाल
6ण् अरंण्डी बीज 70.75 भिगाकर फूले हुए बीज
को पानी के साथ पीस
करएवं छान कर दूध
जैसे तरल को मिलायें
7.
8.

मंूगफली बीज 70.75
सोयाबीन बीज 30.40

तदैव
तदैव
तदैव
तदैव

तदैव
तदैव